390/22/4/16

शोधकर्त्री : पूनम

शोध– निर्देशिका: डॉ0 इन्दु वीरेन्द्रा

विभाग: हिन्दी

बिषय: नयी कहानी आंदोलन के दौर की कहानियों में स्त्री–मुक्ति–संदर्भ का अध्ययन।

शोध –सार

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध 'नई कहानी आंदोलन के दौर की कहानियों में स्त्री–मुक्ति–संदर्भ का अध्ययन' में कमलेश्वर, मोहन राकेश और राजेन्द्र यादव की कहानियों के अन्तर्गत चित्रित स्त्री–पात्रों का विभिन्न स्थितियों में विश्लेषण करते हुए तत्कालीन समाज में स्त्री के संघर्ष को केन्द्र में रखा गया है।

स्त्री के पूर्ण स्वाधीन न होने के पीछे कारण उसका त्रिकोणात्मक स्वरूप है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् स्त्री के व्यक्तित्व ने त्रिकोण में अपनी भूमिका निभाई। एक ओर उसके समक्ष घर की जिम्मेदारियाँ आयीं, दूसरी ओर बाह्य परिवेश से उत्पन्न नवीन स्थितियाँ और तीसरी ओर वैयक्तिक चेतना के परिणामस्वरूप अस्मिता की तलाश की समस्या उठी। इससे स्त्री का व्यक्तित्व घर, समाज और स्वयं–तीनों धरातलों पर जुड़ा। अब उसका व्यक्तित्व अपने स्वतंत्र चुनाव का विषय बन गया, पुरूष के चुनाव का नहीं।

सदियों से रूढ़ियों, जर्जर परंपराओं और शोषण के शिकंजे में कसी हुई स्त्री थोड़ा–सा समर्थन पाकर अपनी आज़ादी और अस्मिता की रक्षा का वास्तविक मार्ग तलाशनें निकल पड़ी। शिक्षा, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता ने उसे नई दिशा दी। परंपरागत यातना और नई परिकल्पना के धुंधलके में संघर्ष करती हुई स्त्री आज अपने नए स्वरूप को गढ़ने की कोशिश कर रही है।

स्त्री पुरूष विरोधी न होते हुए उसकी सत्ता से मुक्ति की आकांक्षा करती है। पुरानी कहानी मनुष्य को एक निश्चित परिभाषा के अन्तर्गत आदर्शवादी रूप में चित्रित करती थी किन्तु नई

कहानी में व्यक्ति अपनी सभी कमजोरियों से युक्त साधारण आदमी की तरह चित्रित हुआ है। अपने रूढ़िगत रूप में स्त्री यहाँ केवल माँ, बहन, प्रेमिका, पत्नी या पुत्री ही नहीं अपितु मित्र भी है। संबंधों में भी केन्द्रीय संबंध स्त्री–पुरूष का संबंध बना। बदली हुई स्थितियों में स्त्री अब पुरूष के पूर्णतः अधीन नहीं थी। वह अब दया, रूमान, श्रद्धा आदि का विषय न रह कर प्रतिद्वंद्विता का विषय बन गई थी।

स्त्री–मुक्ति की आकांक्षा, इस आकांक्षा हेतु उपजा संघर्ष एवं मुक्ति की सार्थक तलाश कहानी साहित्य में अभिव्यक्त हुई है। नया कहानीकार स्त्री को स्त्री के रूप में स्वीकार करता है, उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व और इकाई के रूप में अभिव्यक्ति देता है।

आज की स्त्री अपने सामूहिक संघर्ष की मदद से लिंग समानता की दिशा में बढ़ी है। या यूँ कहें अपनी चेतना को विकसित करते हुए समान अधिकारों (पुरूष के समकक्ष) को प्राप्त करने के मार्ग पर अग्रसर हो रही है। यद्यपि रास्ता लंबा और चुनौतीपूर्ण है, परन्तु ये यात्रा निरन्तर चलती रहेगी।